tcsacademy

सामान्य अध्ययन*(General Studies)*

भारतीय अर्थव्यवस्था

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

पाठ्यक्रम, नोट्स तथा बैच संबंधी **updates** निरंतर पाने लिये निम्नलिखित पेज को **"Like"** करें

www.facebook.com/tcsacademy

www.twitter.com/@tcsacademy

इकाई–1

अर्थव्यवस्था : एक परिचय
(*Economy : An Introduction*)

अर्थव्यवस्था क्या है? (*Whats Economy?)*

किसी राष्ट्र द्वारा अपने नागरिकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार करने के उद्देश्य से, उपलब्ध संसाधनों का समुचित नियोजन करते हुये अर्थ को केन्द्र में रखकर बनाई गई व्यवस्था ही अर्थव्यवस्था कहलाती है। वास्तव में 'अर्थव्यवस्था' शब्द अधूरा ही रहेगा जब तक कि इसके आगे किसी देश या किसी क्षेत्र विशेष का नाम न जोड़ा जाये, जैसे–भारतीय अर्थव्यवस्था, चीनी अर्थव्यवस्था, अमेरिकी अर्थव्यवस्था, विकासशील विश्व की अर्थव्यवस्था इत्यादि। अर्थव्यवस्था किसी देश या क्षेत्र विशेष में अर्थव्यवस्था का गतिशील चित्र है। जो किसी विशेष अवधि तक ही सीमित होता है। यदि हम कहते हैं– 'समसामयिक भारतीय अर्थव्यवस्था' तो इसका तात्पर्य होता है– वर्तमान समय में भारत की सभी आर्थिक गतिविधियों का वर्णन।

'अर्थव्यवस्था' अर्थशास्त्र में व्यापक रूप से प्रयोग होने वाली वह अवधारणा है, जिसका अभिप्राय किसी क्षेत्र विशेष में प्रचलित आर्थिक क्रियाओं की प्रकृति एवं उनके स्तर से होता है। वह क्षेत्र चाहे तो एक गांव, एक जिला, एक राज्य अथवा संपूर्ण देश हो सकता है। आर्थिक क्रिया में उत्पादन, उपभोग, निवेश तथा विनिमय को शामिल किया जाता है। उत्पादन का अर्थ आगतों या कारकों को उत्पाद में बदलना है। अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये वस्तुओं, जैसे– भवन, मशीनें आदि का प्रयोग करना है, जबकि विनिमय से अभिप्राय वस्तुओं और सेवाओं के क्रय एवं विक्रय से है।

अर्थव्यवस्था के प्रकार (*Types of Economy?)*

अर्थव्यवस्था के प्रकारों पर विवाद की शुरूआत एडम स्मिथ की पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' से मानी जाती है। समकालीन विश्व में अर्थव्यवस्था के मूलतः तीन प्रकार अस्तित्व में, जो निम्नलिखित हैं–

पूंजीवादी अर्थव्यवस्था / बाजार अर्थव्यवस्था : ये ऐसी अर्थव्यवस्थायें हैं जिनमें आर्थिक क्रियाओं को बाजार शक्तियों पर छोड़ दिया जाता है। अतः उत्पादक उन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने के लिये स्वतंत्र होता है जिनकी मांग अधिक हो, ताकि वह अधिकतम लाभ कमा सके। इसी प्रकार उपभोक्ता भी अपने चयन एवं रूचि के अनुरूप वस्तुओं एंव सेवाओं को खरीदनें के लिये स्वतंत्र होता है, ताकि वह अपनी संतुष्टि को अधिकतम कर सके। क्या और कितना उत्पादन तथा उपभोग करनर है, इस सदंर्भ में सरकार का कोई हस्तक्षेप नहीं होता।

बाजार शक्तियों की स्वतंत्र अंतक्रियाओं से तात्पर्य सरकार के हस्तक्षेप के बिना मांग एवं पूर्ति शक्तियों को स्वतंत्र अंतर्क्रिया करने के लिये छोड़ देने से होता है। वस्तुओं एंव सेवाओं की कीमत पूर्ति तथा मांग शक्तियों द्वारा निर्धारित होती है।

समाजवादी अर्थव्यवस्था / केंद्रीय योजनाबद्ध अर्थव्यवस्थाएं : ये ऐसी अर्थव्यवस्थायें हैं जिनमें आर्थिक क्रियाओं का निर्धारण या दिशा–निर्देशन किसी केंन्द्रीय अधिकारी या सरकार द्वारा होता है। केंद्रीय अधिकारी या सरकार ही यह निर्णय लेती है कि वस्तुओं तथा सेवाओं का कितना उत्पादन किया जाये कि लोगों द्वारा उपभोग किये जाने के लिये पर्याप्त हो। आर्थिक दृष्टिकोण से, केंद्रीय योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था नहीं है, जबकि बाजार अर्थव्यवस्था निश्चय ही एक स्वतंत्र अर्थव्यवस्था है।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

मिश्रित अर्थव्यवस्था : ये ऐसी अर्थव्यवस्था है जो बाजार अर्थव्यवस्था तथा केन्द्रीय योजनाबद्ध अर्थव्यवस्था/समाजवादी अर्थव्यवस्था दोनों की विशेषताओं को दर्शाती हे। इस प्रकार की अर्थव्यवस्था में आर्थिक क्रियाओं को बाजार शक्तियों की स्वतंत्र अन्तर्क्रिया पर छोड़ दिया जाता है, परंतु इसके साथ–साथ सरकारी अपना नियंत्रण किया जा सके। यहाँ सरकार आर्थिक और सामाजिक न्याय की सीापना के लिये आर्थिक क्रियाओं में हस्तक्षेप करती है।

उपर्युक्त वर्गीकरण के अनुसार, वर्तमान में पूंजीवादी अर्थव्यवस्था के उदाहरण हैं– अमेरिका, ब्राजील, मैक्सिको, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, अर्जेटीन आदिः समाजवादी अर्थव्यवस्था के उदाहरण है– चीन, वियतनाम, क्यूबा, उत्तरी कोरिया आदि : और मिश्रित अर्थव्यवस्था के उदाहरण हैं– भारत, नार्वे , स्वीडन आदि।

वस्तुओं की कीमत का निर्धारण (*Determination of prices of Goods)*

- **बाजार कीमत क्रियाविधि** : इसमें बाजार शक्तियों अर्थात् मांग व आपूर्ति द्वारा कीमत निर्धारित होती है। अतः क्रेताओं एंव विक्रेताओं के बीच मुक्त सौदेबाजी के आधार पर निर्णय लेने की पद्धति को बाजार कीमत क्रियाविधि कहते हैं।
- यह क्रियाविधि पूंजीवादी दर्शन की उपज है। पूंजीवादी दर्शन एक ऐसी व्यवस्था का प्रतिपादन करता है जिसमें सामाजिक आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था पूंजी में निहित होती है और बाजार आधारित होती है। बाजार कीमत क्रियाविधि के अनुसार कार्यशील अर्थव्यवस्था को स्वतंत्र अर्थव्यवस्था कहते है और सरकार की नीति को ऐसे मामले में अहस्तक्षेप की नीति कहते है।

प्रशासित कीमत क्रियाविधि : इसमें प्रशासनिक शक्तियों द्वारा कीमत निर्धारित होती है। अतः यदि सभी आर्थिक निर्णयों पर प्रशासन या सरकार का पूर्ण नियंत्रण हो तथा क्रेताओं को सौदेबाजी की कोई स्वतंत्रता न हो, तो निर्णय की इस पद्धति को प्रशासित कीमत क्रियाविधि कहते हैं।

यह क्रियाविधि समाजवादी दर्शन की उपज है। यह दर्शन ऐसी व्यवस्था का प्रतिपादन करता है जिसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवस्था सरकार के द्वारा नियंत्रित होती है, और ऐसी क्रियाविधि के लिये लाइसेंस नीति अपनाई जाती है। इसका आशय हुआ कि प्रत्येक आर्थिक क्रियाकलाप के लिये सरकार की अनुमति आवश्यक होती है।

- **मिश्रित कीमत क्रियाविधि** ' इस क्रियाविधि में बुनियादी निर्णय प्रशासनिक शक्तियों द्वारा तथा गौण निर्णय बाज़ार द्वारा लिये जाते हैं। इसमें कुछ आर्थिक क्रियाकलापों पर सरकार का तो कुछ पर निजी संस्थाओं का अधिकार होता है। लाइसेंसिंग की प्रक्रिया चयनात्मक होती है। मिश्रित अर्थव्यवस्था में बाजार तथा केंद्रीय योजनाबद्ध दोनों के गुण सुम्मिलित होते है तथा इन दोनों अर्थव्यवस्थाओं की अच्छाइयों को स्वीकार किया जाता है। इसमें ''क्या, कैसे और किसके लिये'' उत्पादन किया जाये से संबधित निर्णय बाजार की शक्तियों तथा सामाजिक कल्याण दोनों के आधार पर लिये जाते हैं। जैसे–भारत में, उत्पादकों को अपने लाभ को अधिकतम करने के लिये, कपड़े या इस्पात का उत्पादन करने की स्वतंत्रता है परन्तु रेलवे पर सरकार का एकाधिकार है। ऐसा कल्याणकारी दृष्टिकोण से किया गया है ताकि आम लोगों को सस्ते परिवहन की सुविधा मुहैया कराई जा सके।
- भारत की अर्थव्यवस्था पूंजीवादी समाजवाद सदृश है। समाजवाद में संपत्ति का अधिकार किसी भी तरीके से नहीं होता, लेकिन हमारे संविधान में संपत्ति का अधिकार एक कानूनी अधिकार हैं भारत का रूझान समाजवाद की तरफ भी है, क्योंकि 'समावेश विकास' का लक्ष्य प्राप्त करना भारत की पंचवर्षीय योजनाओं में पहली प्राथमिकता रही है।
- भारत में 1950–1991 तक मिश्रित कीमत क्रियाविधि लागू थी। सन् 1991 के बाद से क्रियाविधि तो मिश्रित ही रही, लेकिन उसकी रणनीति में परिवर्तन की कोशिश की गयी है, परिणामस्वरू पुरानी आर्थिक प्रणाली में बदलाव आया है।

विभिन्न देशों का उनकी अर्थव्यवस्थाओं के अनुसार वर्गीकरण
(Classification of Different Countries According to Their Economies)

अर्थव्यवस्था के आधार पर विश्व के सभी देशों को निम्नलिखित वर्गो में रखा जा सकता है–

पहली दुनिया के देश : विकसित देशों का समूह, जहां बाजार कीमत क्रियाविधि प्रचलित है, पहली दुनिया के देश कहलाते है, जैसे अमेरिका, कनाडा ऑस्ट्रेलिया आदि।

दूसरी दुनिया के देश : विभिन्न देशों का वह समूह जहां प्रशासित कीमत क्रियाविधि अपनाई जाती है, दूसरी दुनिया के देश कहलाते हैं, जैसे 1990 से पहले का सोवियत संघ, वर्तमान चीन आदि। आजकल ऐसी अर्थव्यवस्था संक्रमणीय अर्थव्यवस्थायें कहलाती हैं क्योंकि ये अर्थव्यवस्थाएं धीरे–धीरे खुले बाजार की नीति अपना रही हैं।

तीसरी दुनिया के देश : द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद आजाद हुये अधिकांश देशों ने विकास के लिये मिश्रित अर्थव्यवस्था को अपनाया। इन्हीं को तीसरी दुनिया का देश कहा जात है, जैसे भारत, पाकिस्तान, श्रीलंका, नेपाल आदि। इन्हें अल्पविकसित देश भी कहा जाता है।

चौथी दुनिया के देश : विश्व में कई ऐसे देशों का एक समूह भी है जो विकास का मार्ग अपनाने के लिये द्वंद्व की स्थिति में हैं। इन देशों में प्रगति के पथ पर यात्रा अभी शुरू भी नहीं हुई हैं इन्हें अल्पतम विकसित देश कहा जाता है, जैसे युगांडा, सूडान, रवांडा आदि।

उत्पादन के कारक (*Factors of Production)*

वे सभी तत्व जिनके एक साथ मिलने पर उत्पादन का कार्य पूरा होता है, उत्पादन के कारक कहलाते हैं। दूसरे शब्दों मे, विभिन्न प्रकार के संसाधनों में पाई जाने वाली उत्पादन शक्ति को उत्पादन का कारक कहा जाता है। उत्पादन के कारकों को हम चार वर्गो में बांटते हैं–

1. श्रम : मानव शरीर या मस्तिष्क में पाई जाने वाली उत्पादन शक्ति को श्रम कहते हैं। श्रम का हस्तांतरण दो दिशाओं में होता हैः

अ. ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण : निम्न कौशल से उच्च कौशल की ओर श्रम का हस्तांतरण।

ब. क्षैतिज हस्तांतरण : एक उत्पादन क्षेत्र से किसी अन्य उत्पादन क्षेत्र में श्रम का हस्तांतरण।

ऊर्ध्वाधर तथा क्षैतिज हस्तांतरण में भेद इस उदाहरण से समझा जा सकता है : यदि कोई किसान अपने खेतों में उन्नत बीजों का प्रयोग करता है। और उत्पादकता को बढ़ाता है, तो इसे ऊर्ध्वाधर हस्तांतरण कहेंगे। इसी प्रकार, यदि विभिन्न आर्थिक पेशे जड़ न हों, मानव श्रम को अनुवांशिक पेशों से मुक्त रखा जाये और सभी को रूचि एंव क्षमताओं के अनुसार पेशा चुनने का अधिकार दिया जाये तो इसे श्रम की गतिशीलता अथवा हस्तांतरण कहेंगे।

2. भूमि : सामान्तयता भूमि का आशय पृथ्वी की सतह से ही लगाया जाता है लेकिन अर्थशास्त्र में इसे प्राकृतिक संसाधनों के संदर्भ में देखा जाता है। प्राकृतिक संसाधनों में पाई जाने वाली उत्पादन शक्ति है, अतः इसे नदी की 'भूमि' कह सकते हैं। इसी प्रकार, बादल में विद्यमान आर्द्रता तथ्य मृदा की उर्वरता क्रमशः बादल और मृदा की भूमि है।

3. पूंजी : पूंजी का आशय ऐसे मानव निर्मित संसाधनों से है जिनका इस्तेमाल उत्पादन में किया जाता है। पूंजी के तीन रूप होते हैं, जो निम्नलिखित हैं–

अ. भौतिक पूंजी – मानव निर्मित भौतिक संसाधनों की उत्पादन शक्ति को भौतिक पूंजी कहते हैं। भौतिक पूंजी के उदाहरण हैंः नगर, सड़क, भवन, पुल, मशीन, वाहन इत्यादि।

ब. बौद्धिक पूंजी – मानवीय विचारों की उत्पादन शक्ति को बौद्धिक पूंजी कहते हैं। उदाहरण के लिये साहित्यिक विचार, वैज्ञानिक विचार, कलात्मक विचार, धार्मिक विचार व अष्किार इत्यादि।

स. वित्तीय पूंजी – मुद्रा एंव मुद्रा से व्युत्पन्न अन्य संसाधनों की उत्पादन शक्ति को वित्तीय पूंजी कहते हैं। वित्तीय पूंजी कहते हैं। वित्तीय पूंजी के उदाहरण हैः नकद, धनराशि, आभूषण, संपत्ति आदि। (ध्यातव्य है कि मुद्रा का आविष्कार भारत में पांचवीं शताब्दी ई.पू. हुआ, उससे पहले भारत में वित्तीय पूंजी बाजार नहीं था।)

बौद्धिक पूंजी को भी तीन वर्गो में रखा जा सकता है–

क. कलात्मक बौद्धिक पूंजी : कलात्मक विचारों के अन्दर की उत्पादन शक्ति को कलात्मक बौद्धिक पूंजी कहते हैं, जैसे किताबें, लेख या चित्र आदि। कलात्मक पूंजी के स्वामित्व को कॉपीराइट कहा जाता है। इसका संकेत : © है।

ख. वैज्ञानिक बौद्धिक पूंजी : वैज्ञानिक विचारों की उत्पादन शक्ति को वैज्ञानिक बौद्धिक पूंजी कहते हैं, जैसे प्राद्योगिकी।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

या कोई वैज्ञानिक आविष्कार। वैज्ञानिक पूंजी या प्रौद्योगिकी पूंजी के स्वामित्व को पेटेंट कहा जाता है। इसका संकेत ® है।

स. व्यावसायिक बौद्धिक पूंजी – किसी व्यवसाय को चलाने के लिये जिन विचारों का प्रयोग होता है, उन विचारों की उत्पादन शक्ति को व्यावसायिक बौद्धिक पूंजी कहते हैं, जैसे टाटा द्वारा नैनो कार निर्माण का विचार आदि। व्यावसायिक बौद्धिक पूंजी के स्वामित्व को ट्रेड मार्क कहा जाता है। इसका संकेत : TM है।

4. उद्यमशीलता : किसी व्यक्ति या व्यक्ति समूह में पाई जाने वाली एक संश्लिष्ट उत्पादन शक्ति को उद्यमशीलता कहते है। इसके तीन अवयव होते हैं, जो निम्नलिखित हैं–

स्पष्ट है कि किसी कार्य विशेष को करने की अन्तर्निहित गतिशील प्रवृत्ति को भूख कहते हैं। किसी भी उद्यम के लिये उपर्युक्त तीनों प्रवृत्तियों का व्रीव होना आवश्यक है। उद्यम आर्थिक के साथ–साथ समाजिक, राजनीतिक आदि भी हो सकता है क्योंकि हर उद्यम में नवाचार, प्रबंधन तथा जोखिम जैसे अवयव विद्यमान होते है।

उत्पादन के विभिन्न क्षेत्र (*Different Sectors of Production)*

उत्पादपन की प्रकृति के आधार पर उत्पादन क्रियाओं को तीन क्षेत्रों में बांटा जाता है–

- प्राथमिक क्षेत्र : नैसर्गिक संसाधनों के प्रत्यक्ष दोहन द्वारा जिन वस्तुओं का उत्पादन किया जाये उन्हें प्राथमिक वस्तुयें कहते हैं तथा ऐसी वस्तुओं के उत्पादन में संलग्न संस्थागत संरचना को प्राथमिक क्षेत्र कहते हैं।
- द्वितीयक क्षेत्र : प्राथमिक वस्तुओं में एक या कई बार मूल्यवर्धन द्वारा जिन नई वस्तुओं का उत्पादन किया जाये, उन्हें द्वितीयक स्तुयें क्षेत्र कहते हैं।
- तृतीयक क्षेत्र : अदृश्य सेवाओं को तृतीय वस्तुयें कहते हैं तथा सेवाओं के उत्पादन में संलग्न संरचना को तृतीयक क्षेत्र कहते हैं।

आय का चक्रीय प्रवाह (*Cycle Flow of Income)*

किसी भी अर्थव्यवस्था में कारक सेवाओं तथा अंतिम वस्तुओं एंव सेवाओं के परस्पर निर्भर प्रवाहों को आय का चक्रीय प्रवाह कहा जाता है। चूंकि ये दोनों एक दूसरे पर निर्भर रहते हुये एक चक्र के रूप में कार्य करते हैं इसलिये इसे आय का चक्रीय प्रवाह कहते हैं। इसे निम्न आरेख से समझा जा सकता है–

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

उत्पादन क्षेत्र तथा घरेलू क्षेत्र के संबधों को जानने के लिये 'कारक आय' की अवधारणा स्पष्ट करना आवश्यक है। कारक आय से अभिप्राय किसी व्यक्ति द्वारा अर्जित उस आय से है जो उसे कारक सेवा के बदले में प्राप्त होती है। यह उसके श्रम के बदले में मजदूरी, उसकी भूमि के लिये लगान, पूंर्जी के लिये ब्याज तथा उद्यमिता के लिये लाभ के रूप में हो सकती है। इसमें ऐसी कोई भी आय शमिल नहीं होती जो अर्जित नहीं की गई है अथवा जिसकें बदले में कोई सेवा प्रदान नहीं की गई। उदाहरण के लिये, वरिष्ठ नागरिकों को प्राप्त होने वाली वृद्धावस्था पेंशन अर्जित आय नहीं है। ऐसी प्राप्तियों या भुगतानों को हस्तांतरण प्राप्तियां या हस्तांतरण भुगतान कहा जाता है। इसकी राष्ट्रीय आय के अनुमान में शामिल नहीं किया जाता है।

आय के चक्रीय प्रवाह का वर्गीकरण (*Classification of Cyclic Flow of Income)*

आय के चक्रीय प्रवाह को दो प्रकार से वर्गीकृत किया जा सकता है। पहला, स्वरूपगत लक्षण के आधार र तथा दूसरा, गुणात्मक आधार पर।

आय के चक्रीय प्रवाह को बाधित करने वाली चुनौतियां (*Factors that Cause Disturbance to the Cyclic Flow of Income)*

किसी अर्थव्यवस्था में आय के चक्रीय प्रवाह को बाधित करने वाली चुनौतियों को दो वर्गों में रखा जा सकता है– बाह्याजन्य चुनौतियां और अंतर्जात चुनौतियां।

मुद्रास्फीति (*Inflation*)

किसी अर्थव्यवस्था में किसी कालावधि विशेष में वस्तुओं व सेवाओं के सामान्य मूल्य–स्तर में वृद्धि हो जाने की स्थिति मुद्रास्फीति कहलाती है। यह मांग प्रेरित भी हो सकती है और लागत जन्य भी।

1. मांग–प्रेरित मुद्रास्फीति : यदि वस्तुओं की आपूर्ति के सापेक्ष वस्तुओं की मांग में अधिक्य उत्पन्न हो तो क्रेता या उपभोक्ता आपस में स्पर्धा करते हुये ऊँची कीमत की बोली लगाते हैं, जिससे कीमत बढ़ जाती है। इसलिये इसे मांग–प्रेरित मुद्रास्फीति कहते है।

मांग–प्रेरित मुद्रास्फीति के निम्नलिखित कारण हैं–

- उत्पादन के सापेक्ष जनसंख्या में तीव्रतर वृद्धि।
- उत्पादन के सापेक्ष मुद्रा आपूर्ति में अधिक वृद्धि।
- सरकार की आय प्राप्ति के सापेक्ष उच्चतर व्यय।
- विदेशों से प्राप्त अतिरिक्त मुद्रा राशि।
- आय वितरण में असमानता।
- अवैध आय से भी महंगाई आती है।

एक अनुमान के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था में कूननी अर्थव्यवस्था दो'–तिहाई है और गैर–कानूनी अर्थव्यवस्था एक–तिहाई है। अवैध आय से संचालित अर्थव्यवस्था को समानांतर अर्थव्यवस्था कहा जाता है।

2. लागतजन्य मुद्रास्फीति – कारक सेवाओं की एक निश्चित मात्रा के बदल में किये गये कारक भुगतान की मात्रा में यदि वृद्धि हो जाये अर्थात् उत्पादन लागत बढ़ जाए तो उत्पाद की कीमत बढ़ जाती है, जिसे लागतजन्य मुद्रास्फीति कहते हैं। पूरी अर्थव्यवस्था में श्रम लागत में वृद्धि होने पर मंहगाई बढ़ जाती है, इसके अलावा कुछ अन्य कारक भी इसके लिये जिम्मेदार हो सकते हैं, जैसे–

- मजदूरी लागत
- कर लागत
- उद्योगपतियों को ज्यादा आय
- परोक्ष करों की लागत

अफस्फीति (*Deflation*)

किसी अर्थव्यवस्था में वस्तुओं एंव सेवाओं के सामान्य मूल्य स्तर में गिरावट की स्थिति अवस्फीति कहलाती है। जब अर्थव्यवस्था में मुद्रास्फीति की दर शून्य प्रतिशत से नीचे चली जाती है तो ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

अवस्फीति के कारण *(Causes of Deflation)*

- यदि मांग के सापेक्ष आपूर्ति अधिक हो या आपूर्ति के सापेक्ष मांग कम हो तो अवस्फीति की स्थिति उत्पन्न होती है।
- यदि कानूनी उपाय द्वारा सरकार कीमतों को कम करे तो अवस्फीति उत्पन्न होती है।
- यदि उत्पादकों के बीच स्पर्धा अधिक हो तो कीमतें गिर जाती हैं।
- यदि सरकार कर अवकाश की घोषणा कर दे तो अवस्फीति की स्थिति उत्पन्न हो सकती है।

बचत की अवधारणा (*Concept of Saving)*

वर्तमान आय का वह अंश जिसे भविष्य में उपभोग के लिये बचा लिया जाये अर्थात् आज उपभोग पर व्यय न किया जाये, उसे बचत कहते हैं।

$$1 \text{ (आय)} = C \text{ (उपभोग)} + S \text{ (बचत)}$$

$$S_h > S_c > S_g$$

किसी भी देश में घरेलू बचत का मान सर्वाधिक होता है। उसके बाद क्रमशः निगम और सरकारी बचत आते हैं। साधारणतः सरकारी बचत का मान ऋणात्मक होता है और इस ऋणात्मक राशि को राजकोषीय घाटा कहते है। चूंकि पैसे को उदासीन रखने का कोई लाभ नहीं होता, इसलिये उसका उत्पादन कार्य में निवेश किया जाना चाहिये। ऐसे निवेश को सकल घरेलू निवेश कहते है।

$$\text{सकल घेरलू बचत } S_h + S_c + S_g$$

बचत की विद्यमानता के आधार पर आय दो प्रकार की होती है :

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

जिस देश/राज्य/जिले के ज्यादातर उत्पादकों की आय निर्वाह स्तर की हो वहां की अर्थव्यवस्था निर्वाह अर्थव्यवस्था कहलाती है। दूसरी ओर, जिस देश/राज्य/जिले के ज्यादातर उत्पादकों की आय अधिशेष स्तार की हो वहां की अर्थव्यवस्था अधिशेष अर्थव्यवस्था कहलाती है।

निवेश की अवधारणा (*Concept of Investment)*

ऐसा व्यय जिससे उत्पादन बढ़ाने में मदद मिलती है, निवेश कहलाता है। निवेश का उत्पादन पर दो प्रकार से प्रभाव पड़ता है, जो निम्नलिखि है–

उपर्युक्त दोनों उपकरणों में संबंध रेखीय न होकर चक्रीय है अर्थात् शासन में सुधार के साथ ही निवेश में वृद्धि होती है, जिससे अर्थव्यवस्था में सुधार आता है तथा अर्थव्यवस्था में सुधार के साथ शासन में सुधार आता है।

निर्यात (*Export)*

निर्यात का अर्थ है– वस्तुओं व सेवाओं को किसी अन्य देश में बेचना या भेजना।

निर्यात बढ़ाने के लाभ : निर्यात बढ़ने से विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ता है जिससे देश के व्यापारियों का उत्साह बढ़ता है और उत्पादन बढ़ाने को प्रेरणा मिलती है। सेज सीापित कर निर्यात बढ़ायेगें तो उत्पादकों को निर्यात बढ़ाने की प्रेरणा मिलेगी। इसके

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala,
Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

परिणामस्वरूप निवेश बढ़ेगा तथा निवेश से क्रमिक रूप से रोजगारों की संख्या बढ़ेगी और रोजगारों की संख्या बढ़ने के परिणामस्वरूप समाज की आय बढ़ेगी। समाज की आय बढ़ने से समाज का उपभोग स्तर बेहतर होगा और लोग गरिमामय जीवन के लिये अग्रसर होंगे। इसके साथ ही, लोगों को बचत बढ़ाने की प्रेरणा मिलेगी। इस प्रकार वे बचत का निवेश करके ब्याज कमा सकेंगे। इस प्रकार पुनः आय बढ़ेगी और सम्पूर्ण प्रक्रिया की परिणति आय के सुचक्र अर्थात् वर्तलाकार ऊर्ध्वमुखी दबाव में होगी। अतः निर्यात बढ़ाने का लाभ व्यापारियों को पहले प्रत्यक्ष रूप से और फिर आम जनता को समय के साथ क्रमिक रूप से मिलेगा।

निर्यात की हानियाँ (*Disadvantage of Exporting)*

• यदि देश में वस्तुओं की उपलब्धता कम होगी तो उस वस्तु के निर्यात को प्रोत्साहित करने से देश में वस्तु की आपूर्ति कम होगी और इस प्रकार मंहगाई बढ़ेगी।
• निर्यात बढ़ाने से विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ेगा, जिसकी परिणति घरेलू मुद्रा की मात्रा बढ़ने में होगी और इस प्रकार मंहगाई बढ़ेगी। मंहगाई बढ़ने से जनता के उपभोग स्तर में अनियमितता आयेगी।
• निर्यात बढ़ाने से निर्यात क्षेत्र की आय बढ़ेगी और वहां कार्यरत मजदूर, मजदूरी बढ़ाने का दबाव बनायेंगे, जिससे आय विषमता बढ़ेगी।
• गैर–नवीकरणीय भंडार का निर्यात बढ़ायेगें तो सतत् विकास की प्रक्रिया में मुश्किलें बढ़ेंगी। कई प्रकार के कच्चे माल, जिनकी उपलब्धता हमारे देश में पहले से ही कम है, का निर्यात बढ़ाने पर घरेलू उद्योगों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा।
• जिस देश को निर्यात किया जायेगा वहां के उत्पादकों पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। उस देश के व्यापारियों की आय कम होगी और वहां रोजगार में कमी आयेगी। इसके परिणामस्वरूप, उस देश के साथ संबंधों में तनाव आ सकता है।
• निर्यात बढ़ने से अन्य देशों पर निर्भरता बढ़ जाती है और वहां मंदी आने से घरेलू अर्थव्यवस्था में भी मंदी आ सकती है।

निर्यात नियंत्रण के उपाय (*Measures to Control Export)*

उपर्युक्त हानियों को देखते हुये, किसी भी अर्थव्यस्था में निर्यात पर नियंत्रण हेतु निम्नलिखित उपाय किये जा सकते हैं:

• निर्यात सीमित होना चाहिये ताकि घरेलू अर्थव्यस्था पर दुष्प्रभाव न पड़े तथा साथ ही गैर–नवीकरणीय संसाधनों के निर्यात के सीान पर सेवा निर्यात और फसलों के निर्यात को वरीयता देनी चाहिये।
• चूंकि शहरों की आय पहले से ही ज्यादा है, इसलिये निर्यात को एक ऐसे उपकरण की तरह इस्तेमाल करना चाहिये जिससे शहर और गांव के मध्य विषमता में कमी आये।

आयात (*Import)*

आयात का अर्थ है– वस्तुओं व सेवाओं को किसी अन्य देश से खरीदना अथवा मंगवाना। इस व्यवस्था में विदेशी उत्पादकों द्वारा घरेलू उपभोक्ताओं को वस्तुयें एंव सेवायें बेची जाती हैं।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

आयात बढ़ाने के लाभ (*Advantages of Increasing Import)*

आयात बढ़ाने से किसी अर्थव्यवस्था को क्या लाभ पहुंचाता है, निम्नांकित बिंदुओं से स्पष्ट होता हैः

• जिन वस्तुओं का उत्पादन देश में नहीं होता, जैसे सोना, चांदी, कच्चा तेल आदि, उनका आयात गरिमामय जीवन उत्पादन बढ़ेगा। उत्पादन बढ़ने से देश का उपभोग स्तर उन्नत होगा। उपभोग स्तर उनका होने से जनता गरिमामय जीवन की ओर अग्रसर होगी तथा पुनः आय के साथ अपना बचत बढ़ायेगी और बचत का निवेश करेंगी। निवेश बढ़ने से क्रमिक रूप से रोज़गारों की संख्या बढ़ेगी और रोजगारों की संख्या बढ़ने के साथ–साथ समाज की आय भी बढ़ेगी।

• जिन प्रौद्योगिकियों का उत्पादन हमारे देश में नहीं होता उनका आयात करने पर हमारी तकनीकी उन्नति होगी। उदाहरण के लिये मशीनों का आयात करके विशेष आर्थिक क्षेत्र स्थापित करने से देश की उत्पादन क्षमता का विस्तार होगा और वस्तुओं का निर्यात होने से पुनः रोजगार के अवसर बढ़ेंगे।

• आयात करने से घेरलू उत्पादकों में प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी। इससे वस्तुओं की गुणवत्ता में वृद्धि होगी, साथ ही मंहगाई में भी कमी आयेगी।

• आयात बढ़ने से सरकार को कर की प्राप्ति होगी और सरकार पूंजी प्राप्त कर बेहतर ढ़ंग से 'कल्याणकारी कार्य' कर सकेंगी।

• तत्काल उत्पादन क्षमता में सुधार किये जाने से अनुसंधान और विकास की प्रक्रिया को बढ़ावा मिलेगा।

• वैध रूप से आयात की अनुमति मिलने से अवैध आयात (तस्करी) की प्रवृत्ति पर स्वतः रोक लगेगी।

•

आयात की हानियां (*Disadvantages of Importing)*

किसी भी अर्थव्यवस्थां में वस्तुओं व सेवाओं का स्वंय उत्पादक करने की बजाय उन्हें किसी अन्य देश से खरीदने अथवा मंगवाने के प्रतिकूल परिणामों अथवा हानियों को बिंदुवार इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता हैः

• आयात उदारीकरण से अंतराष्ट्रीय निर्भरता बढ़ेगी जो कि भारत पर बाह्य संप्रभुता के लिये दबाव उत्पन्न करेगी।

• यदि ऐसी वस्तुओं का आयात किया जायेगा जिनकी पर्याप्त उपलब्धता पहले से ही देश में है तो घरेलू उत्पादकों को नुकसान होगा। इससे कई उत्पादक इकाइयाँ बंद हो सकती हैं और रोजगार में कमी आ सकती है।

आयात उदारीकरण : किसी अर्थव्यवस्था द्वारा आयातित वस्तुओं व सेवाओं पर प्रशुल्क, कोटा, अधिनियमों, कर व अन्य प्रतिबंधों में छूट दिये जाने को आयात उदारीकरण कहा जाता है।

• केवल आयात करने से एवं घरेलू उत्पादन की उपेक्षा करने से घरेलू उत्पादन बंद होगा और देश की अर्थव्यवस्था र कुप्रभाव पड़ेगा।

• आयात बढ़ाने से विदेशी मुद्रा भंडार कम होगा।

• यदि विदेशी मुद्रा का भंडार कम होगा तो विदेशी सरकारों पर अनुदान हेतु निर्भरता बढ़ेगी और इससे देश को कूटनीतिक नुकसान हो सकता है।

• अत्यधिक आयात से लोगों में विदेशी संस्कृति के प्रति अंध–श्रद्धाभाव बढ़ सकता है।

आयात नियंत्रण के उपाय (*Measures to Contrl Import)*

आयात उदारीकरण से उत्पन्न होने वाली चुनौतियों को नज़र में रखते हुये, अवांछित आयात पर नियंत्रण रखने के साथ ही आयात उदारीकरण की नीति लागू करनी चाहिये। इस प्रकार, अंधी–दौड़ में शामिल न होकर विवेकसंगत निर्णय लिया जाना चाहिये।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश (*Outward Foreign Investment)*

देशी बचत राशि का विदेशों में निवेश बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश कहलाता है।

बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश के लाभ (*Advantages of Outward Foreign Investment)*

- इससे विदेशों में लाभ और ब्याज कमाने में मदद मिलती है। साथ ही, अन्य देशों में अपने प्रशिक्षित कामगारों को रोजगार दिलाने में मदद मिलती है।
- इससे देश को कूटनीतिक फायदा होता है क्योंकि साझेदार देश में उत्पादन और रोजगार बढ़ाने में मदद मिलती है।
- मित्र देशों में खाद्य, पूंजी आदि द्वारा सहायता पहुंचाने से बाह्य संप्रभुता भी सशक्त होती है और इस प्रकार समर्थक देशों की संख्या बढ़ती है और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाओं में निवेशक देशों की साझेदारी को वास्तविक धरातल प्राप्त होता है।
- इससे सांस्कृतिक लाभ भी मिलते है क्योंकि इससे निवेशक देशों की संस्कृति का विश्व भर में प्रचार होता है और दूसरे देशों में छवि बेहतर होती है।

बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश की हानियां (*Disadvantages of Outward Foreign Investment)*

किसी अर्थव्यवस्था में अधिक बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश से देशी निवेश के लिये निधि की उपलब्धता कम हो सकती है। अतः जब घरेलू बचत राशि पर्याप्त हो तभी ऐसी नीति अपनाई जानी चाहिये अन्यथा देश में वस्तुओं की खपत गिरेगी। जिससे घरेलू उत्पादकों को नुकसान होगा। अतः मितव्ययिता बढ़ाकर ज्यादा बाह्योमुखी विदेशी निवेश किया जाना चाहिये। इस प्रकार के निवेश की अन्य हानियां हैं:

- स्पर्धात्मक कूटनीतिक युग से कुछ देशों को मदद करने पर गलतफहमी अन्य देश बुरा मान सकते है। अतः देश को कूटनीतिक नुकसान हो सकता है।
- जिस देश में निवेश को बढ़ावा मिलेगा वहां के नागरिक–समाज में हमारे प्रति गलतफहमी पैदा हो सकती है और अन्य देश इसका दुष्प्रचार कर सकते हैं।
- यदि हमारी संस्कृति का अन्य देश में विस्तार होता है तो वहां उस देश की संस्कृति पर दबाव पड़ता है।
- सहायता राशि का भी अन्य देश द्वारा दुरूपयोग किया जा सकता है।
- दूसरे देश के सीानीय कामगारों में हमारे कामगारों के प्रति अवांछित प्रतिस्पर्धा की भावना का विकास हो सकता है।

बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश पर नियंत्रण के उपाय (*Measures to Control Outward Foreign Investment)*

बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश से पहले मित्र देश के नागरिक–समाज को विश्वास में लेना चाहिये। साथ ही, उसे वहां के मजदूरों को पारदर्शी तरीके से शामिल करना चाहिये। इस बात का भी ध्यान रखा जाना चाहिये कि विरोधी देश किसी भी प्रकार की अफवाहें न फैलायें।

अन्तर्मुखी विदेशी निवेश (*Inward Foreign Investment)*

अन्य देशों से देश के अंदर आने वाले निवेश को अर्न्तमुखी विदेशी निवेश कहते है।

अन्तर्मुखी विदेशी निवेश के लाभ (*Advantages of Inward Foreign Investment)*

- इससे घरेलू निवेश की बचत राशि से ऊँचा उठाने में मदद मिलती है।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

• बेरोजगारी का त्वरित गति से ह्रास होता है और उत्पादन एवं आय बढ़ाने मदद मिलती है। लोगों की आय बढ़ने से सरकार की कर–प्राप्ति में वृद्धि होती है।
• विदेशी निवेश से आधारभूत संरचना का तेजी से विकास होता है और घरेलू बुनियादी ढांचा सुदृढ़ होता है। इस प्रकार संपूर्ण आर्थिक क्रियाकलाप में तेजी आती है।
• पूंजी भंडार क्षेत्र में सक्रियता बढ़ती है। विदेशी धन का निवेश यदि ग्रामीण क्षेत्रों में किया जाता है तो गांवों की उन्नति के साथ लोगो का शहर की ओर पलायन कम होता है और इस प्रकार 'भारत' और 'इण्डिया' का द्वैत म करने में मदद मिलती है।
• परम्परागत लघु और कुटीर उद्योगो में विदेशी निवेश को प्रोत्साहित करने तथा उन्हें पुनर्जीवित करने में मदद मिलती है।
• निर्यात को प्रोत्साहित करने वाले जितने कार्यक्रम हैं यदि उनमें विदेशी निवेश आता है तो निर्यात संवर्धन में मदद मिलती है।
• जिन देशों से वित्त आयात होता है उनसे कूटनीतिक संबधों में सुधार होता है।

अन्तर्मुखी विदेशी निवेश की हानियाँ (*Disadvantages of Inward Foreign Investment)*

• किसी भी अर्थव्यवस्था में अधिक अन्तर्मुखी विदेशी निवेश से विदेशों पर निर्भरता बढ़ेगी और देश की स्वतंत्र विदेश नीति में बाधा आयेगी।
• यदि हम विलासितापूर्ण वस्तुओं के उत्पादन में विदेशी निवेश को बढ़ावा देते हैं तो देश की उपभोक्तावादी संस्कृति को भी बढ़ावा मिलता है।
• देश पर विदेशी ऋण का भार बढ़ सकता है और ऋण पर ब्याज की देवता आगे चलकर असह्य हो सकती है।
• यदि निवेश पिछड़े अंचलों को बजाय विकसित अंचलों में किया जाये तो आंचलिक विषमता बढ़ सकती है।
• सतर्क नीति की बजाय अविवेकपूर्ण उदारीकण की नीति अपनाने से संसाधनों के दोहन के स्थान पर शोषण की प्रवृत्ति (पर्यावरणीय) बढ़ सकती है।
• इससे सामाजिक–राजनीतिक विचलन भी आ सकता है। उदाहरणार्थ, यदि विदेशी मुद्रा का निवेश ऐसे क्षेत्रों में किया जाये जो मूलतः रोजगार/श्रम गहन हो बेराजगारी बढ़ने की आंशका हो सकती है।
• विदेशी निवेशों का अविवेकपूर्ण उदारीकरण करने से उत्पादकों पर असह्य दबाव पड़ सकता है, जिससे कई बंद हो सकते है और देश में नव–उपनिवेशेवाद का खतरा उत्पन्न हो सकता है।

अन्तर्मुखी विदेशी निवेश पर नियंत्रण के उपाय (*Measures to Inward Foreign Investment)*

किसी भी देश को विदेशी निवेश से पहले उसकी चुनौतियों से निपटने के लिये एक विनियामक संस्था सीापित करनी चाहिये जो कि स्वयं चयनात्मक रूप से विदेशी मुद्रा का अनुमोदन करे तथा साथ ही, वह विवाद निपटाने के लिये अलग से एक अधिकरण बना दे। इस प्रकार के निवेश पर नियंत्रण रखने के लिये सर्वप्रथम देश का कमजोर उत्पादन क्षेत्र का वित्तीय एंव प्रौद्योगिकीय सशक्तीकरण किया जाये और कौशल उन्नयन भी तथा साथ ही, अनावश्यक भय की आंशका को रोकने के लिये देशमें जागरूकता का विकास भी होना चाहिये।

अभ्यास हेतु वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :

क. उत्पादक उन वस्तुओं एवं सेवाओं का उत्पादन करने के लिये स्वतंत्र है जिनकी मांग आर्थिक है।
ख. उपभोक्ता अपने चयन एवं रूचि के अनुरूप वस्तुओं एवं सेवाओं को खरीदने के लिये स्वतंत्र होते हैं।

अ. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था
ब. समावादी अर्थव्यवस्था
स. मिश्रित अर्थव्यवस्था
द. अर्द्धविकसित अर्थव्यवस्था

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :–
क. पूंजीवादी अर्थव्यवस्था में योग्यता और आवश्यकता के अनुसार वितरण के तत्व समविष्ट होते हैं।
ख. श्रम विभाजन व विनिमय समाजवादी अर्थव्यवस्था की विशेषतायें हैं।
उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

3. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
क. मिश्रित कीमत क्रियाविधि में बुनियादी निर्णय प्रशासनिक शक्तियों द्वारा तथा गौण निर्णय बाजार द्वारा लिये जाते हैं।
ख. भारत की अर्थव्यवस्था पूंजीवादी समाजवाद के नजदीक है।
उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं है।
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

4. उत्पादन के निम्नलिखित कारकों में से किसमें 'जोखिम' की अवधारणा निहित है?
क. भूमि
ख. पूंजी
ग. श्रम
घ. उद्यमशीलता

5. निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प 'सक्रंमणीय' अर्थव्यवस्थायें कहलाती है?
क. पहली दुनिया के देश
ख. दूसरी दुनिया के देश
ग. तीसरी दुनिया के देश
घ. चौथी दुनिया के देश

6. आभूषण उदाहरण हैः–
क. भौतिक पूंजी का
ख. वित्तीय पूंजी का
ग. बौद्धिक पूंजी का
घ. कलात्मक बौद्धिक पूंजी का

7. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :–
क. वैज्ञानिक पूंजी या प्रौद्योगिकी पूंजी के स्वामित्व को पेटेंट कहा जाता है।
ख. व्यावसायिक बौद्धिक पूंजी के स्वामित्व को कॉपीराइट कहा जाता है।
ग. कलात्मक पूंजी के स्वामित्व को ट्रेडमार्क कहा जाता है।

उपरोक्त कथनों में कौन सा/सो असत्य है/हैं?
अ. केवल क और ख
ब. केवल ख और ग
स. केवल क और ग
द. केवल क, ख और ग

8. नैसर्गिक संसाधनों के प्रत्यक्ष दोहन द्वारा निर्मित वस्तुओं में परिवर्तन द्वारा नई वस्तओं का उत्पादन किय जाता है। ऐसी वस्तुओं के उत्पादन में सलंग्न संस्थागत संरचना को कहते हैं–
क. प्राथमिक क्षेत्र
ख. द्वितीयक क्षेत्र
ग. तृतीयक क्षेत्र
घ. चतुर्थ क्षेत्र

9. निम्नलिखित में से द्वितीयक क्षेत्र के अंतर्गत नहीं आता है–
क. विनिर्माण ख. निर्माण
ग. खनन एवं उत्खनन घ. जल विद्युत एवं गैस आपूर्ति

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

10. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
क. हस्तांतरण प्राप्तियाँ या हस्तांतरण भुगतान को राष्ट्रीय आय के अनुमान में शामिल नहीं किया जाता।
ख. विदेशों से प्राप्त अतिरिक्त मुद्रा राशि मांग प्रेरित कीमत बुद्धि का कारण है।
उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

11. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
क. साथ–साथ चलने वाली कानूनी व गैर–कानूनी अर्थव्यवस्था को समानांतर अर्थव्यस्था कहते हैं।
ख. यदि आपूर्ति के सापेक्ष मांग कम हो तो मुद्रा स्फीति उत्पन्न होती है।
उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

12. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
क. यदि कानूनी उपाय द्वारा सरकार कीमतों को कम करे तो अवस्फीति उत्पन्न हो सकती है।
ख. यदि सरकार टैक्स अवकाश की घोषणा करे तो अवस्फीति उत्पनन हो सकती है।
ग. यदि उपभोक्ताओं के बीच स्पर्द्धा हो तो कीमतें कम हो जाती हैं।
उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क और ख
ब. केवल ख और ग
स. क और ग
द. क, ख और ग

13. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
क. उत्पाद शुल्क व विक्रय कर परोक्ष कर के उदाहरण नहीं हैं।
ख. देश में घरेलू बचत का मान सर्वाधिक है, उसके बाद क्रमशः निगम और सरकारी बचत आते है।
उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

14. मांग प्रेरित कीमत वृद्धि का कारण है–

क. विदेशों से प्राप्त अतिरिक्त मुद्राराशि।
ख. परोक्ष करों की लागत।
ग. उद्योगपतियों को ज्यादा आय।
घ. आय–वितरण में असमानता।

उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क और ख
ब. केवल ख और ग
स. केवल क और घ
द. केवल ख और घ

15. समाजवादी अर्थव्यवस्था का लक्षण नहीं है–

क. योग्यता और आवश्यकता के अनुसार वितरण।
ख. श्रम–विभाजन और विनिमय।
ग. सरकार अंतिम निर्णायक के रूप में।
घ. निजी स्वामित्व की धारणा नहीं।

16. निम्न कथनों पर विचार कीजिये :
क. 'द वेल्थ ऑफ नेशन्स' पुस्तक के लेखक पी.सी. महालनोबिस हैं।
ख. मिश्रित कीमत क्रियाविधि में बुनियादी निर्णय बाजार द्वारा, जबकि गौण निर्णय प्रशासनिक शक्तियों द्वारा लिये जाते हैं।
ग. भारत में 1950–1991 तक मिश्रित कीमत क्रियाविधि लागू थी।

उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क और ख
ब. केवल ख और ग
स. क, ख और ग
द. उपरोक्त में से कोई नहीं।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

17. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :

क. उत्पादन के सापेक्ष मुद्रा आपूर्ति में वृद्धि लागत प्रेरित कीमत वृद्धि का कारण हो सकता है।
ख. लागतजन्य मुद्रास्फीति उपभोक्ताओं के लिये श्रेयस्कर होते हैं।

उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

18. निम्न कथनों पर विचार कीजिये–
क. विकसित देशों की अर्थव्यवस्था में बाजार कीमत क्रियाविधि प्रचलित है।
ख. नैसार्गिक संसाधनों के प्रत्यक्ष दोहन का क्षेत्र प्राथमिक क्षेत्र है।
ग. प्राथमिक वस्तुओं में परिवर्तन से नई वस्तुओं का उत्पादन द्वितीयक क्षेत्र करता है, जैसे–खनन एंव उत्खनन।

उपरोक्त में सत्य कथन है/हैं–
अ. केवल ख
ब. केवल ग
स. केवल क और ख
द. क, ख, और ग

19. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये–
क. क्रेताओं एंव विक्रेताओं के बीच मुक्त सौदेबाजी के आधार पर निर्णय लेने की पद्धति को बाजार कीमत क्रियाविधि कहते है।
ख. बाजार कीमत क्रियाविधि के अनुसार कार्यशील अर्थव्यवस्था को स्वतंत्रता न हो, तो निर्णय की इस पद्धति को प्रशासित कीमत क्रियाविधि कहते हैं।

उपरोक्त में सत्य कथन है/हैं–
अ. केवल क और ख
ब. केवल ख और ग
स. केवल क और ग
द. क, ख, और ग

20. मिश्रित कीमत क्रियाविधि के संबंध में सत्य है/हैं–
क. इस क्रियाविधि में बुनियादी निर्णय प्रशासनिक शक्तियों द्वारा तथा गौण निर्णय बाजार द्वारा लिये जाते हैं।
ख. इसमें कुछ आर्थिक क्रियाकलाप पर सरकार की तो कुछ पर निजी संस्थाओं का अधिकार होता है।
ग. इस क्रियाविधि में लाइसेंसिंग की प्रक्रिया चयनात्मक होती है।

कुट :
अ. केवल क और ख
ब. केवल ख और ग
स. केवल क और ग
द. क, ख, और ग

21. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :–
1. मिश्रित अर्थव्यवस्था में उत्पादन के कुछ क्षेत्रों में सामाजिक कल्याण को ध्यान में रखकर ही निर्णय लिये जाते हैं।
ख. समाजवाद में संपत्ति का अधिकार किसी भी तरीके से नहीं होता, लेकिन हमारे संविधान में संपत्ति का अधिकार अभी भी कानूनी है।

उपरोक्त में सत्य कथन है/हैं–
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. केवल क और ख
द. न तो क और न ही ख

22. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :–
क. कीमत विचलन के ऊपरिमुखी को मुद्रास्फीति जबकि अधीमुखी को अवस्फीति कहते हैं।
ख. सरकार की आय प्राप्ति के सापेक्ष उच्चतर व्यय, मांग प्रेरित महंगाई का कारण है।

उपरोक्त में सत्य कथन है/हैं–
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. केवल क और ख
द. न तो क और न ही ख

23. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
क.. एक अनुमान के आधार पर भारतीय अर्थव्यवस्था में कानूनी अर्थव्यवस्था 2/3 है तथा 1/3 अर्थव्यवस्था गैर–कानूनी है।

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org

ख. समानांतर अर्थव्यस्था से अभिप्राय काले धंधे एवं काले आय से संचालित अर्थव्यवस्था से है।

उपरोक्त में सत्य कथन है/हैं–
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. केवल क और ख
द. न तो क और न ही ख

24. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये।
क. यदि मांग के सापेक्ष आपूर्ति अधिक हो या आपूर्ति के सापेक्ष मांग कम हो तो अवस्फीति उत्पन्न होती है।
ख. यदि उत्पादकों के बीच स्पर्द्धा अधिक हो तो कीमतें गिर जाती हैं।
ग. यदि सरकार टैक्स अवकाश की घोषणा करे तो भी अवस्फीति उत्पन्न हो सकती है।

उपरोक्त में सत्य कथन है/हैं–
अ. केवल क और ख
ब. केवल ख और ग
स. केवल क और ग
द. केवल क, ख और ग

25. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
क. सकल घरेलू निवेश से आशय पैसे को उदासीन रखने की बजाय उत्पादन कार्य में निवेश किये जाने से है।
ख. देश में घरेलू बचत का मान सर्वाधिक हैं, उसके बाद क्रमशः निगम और सरकारी बचत आती हैं।

उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

26. निर्यात के फायदे और नुकसान के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये।
क. निर्यात बढ़ने से विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ता है।
ख. निर्यात बढ़ने से विदेशी मुद्रा का भंडार बढ़ेगा, जिसकी परिणति घरेलू मुद्रा की मात्रा बढ़ने में होगी और इस प्रकार मंहगाई बढ़ेगी।

उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

27. आयात बढ़ाने के फायदे और नुकसान के संदर्भ में सत्य है/हैं–
क. जिन वस्तुओं का उपत्पादन देश में नहीं होता, उनका आयात करने से देश का उत्पादन बढ़ेगा व देश का उपयोग स्तर उन्नत होगा।
ख. आयात उदारीकरण से अन्तर्राष्ट्रीय निर्भरता बढ़ेगी जो भारत के बाह्य संप्रभुता के लिये दबाव उत्पन्न करेगा।
ग. आयात बढ़ाने से विदेशी मुद्रा भंडार में कमी आयेगी।

कूटः
अ. केवल क और ख
ब. केवल ख और ग
स. केवल क और ग
द. क, ख, और ग

28. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिये :
क. देशी बचत राशि का विदेशों में निवेश बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश कहलाता है।
ख. बाह्योन्मुखी विदेशी निवेश से देश को कूटनितिक फायदा होता है क्योंकि साझेदार देश में उत्पादन और रोजगार बढ़ाने में मदद मिलती है।

उपरोक्त कथनों में कौन–सा/से सत्य नहीं हैं?
अ. केवल क
ब. केवल ख
स. क और ख
द. न तो क न ही ख

M-1/80 Sec-B, Opp. Sardar Ji Sari Wale, Near Kapoorthala, Aliganj, Lucknow
Ph. : 0522-4005421, 9565697720
Website : www.tcsacademy.org